सच्चाई और भरोसे का महत्व

कोचीसे की कहानी

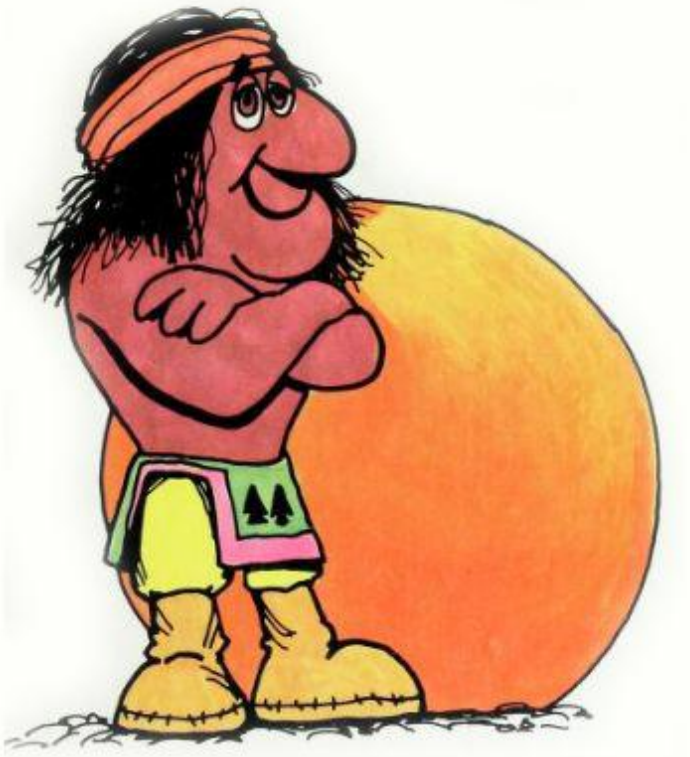

जॉनसन

सच्चाई और भरोसे का महत्व

कोचीसे की कहानी

कैमेरॉन और एमर्सन को समर्पित, जो मुझे उम्मीद है
कि सच्चाई और भरोसे के महत्त्व को हमेशा सराहेंगे।

यह कहानी है एक भरोसेमंद व्यक्ति, यानि कोचीसे की। इस पुस्तक में दी गई कहानी उसके जीवन की घटनाओं पर आधारित है। कोचीसे के बारे में अन्य ऐतिहासिक तथ्य अंतिम पृष्ठ पर दिए गए हैं।

बहुत समय पहले की बात है, एक छोटा रेड इंडियन बालक था, जिसका नाम था कोचीसे। अन्य बच्चों की तरह उसे भी मौज-मस्ती करना बहुत पसंद था। कभी वह अपने रेड इंडियन दोस्तों के साथ खेलता। और कभी वह कल्पना करता कि वह जानवरों के साथ खेल रहा है। वह कल्पना करता कि वह खरगोश के साथ दौड़ लगा रहा है, और गिद्ध के साथ बातचीत कर रहा है।

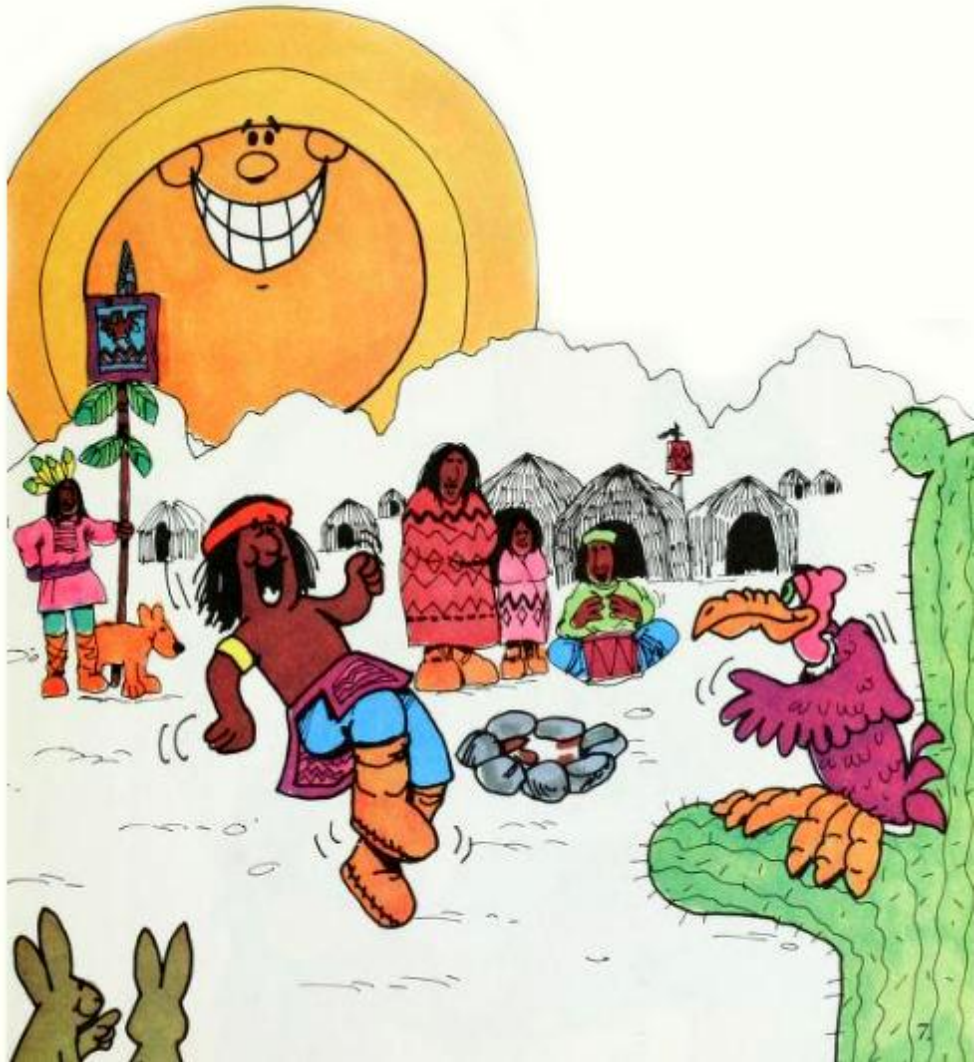

लेकिन जैसे उसकी उम्र बढ़ी, उसे समझ आया कि उसे खेलने कूदने के अलावा भी बहुत कुछ करना है।

एक दिन उसके पिता ने कोचीसे को अपने पास बुलाया। कोचीसे के पिता एरिज़ोना के पहाड़ों में रहने वाले "चिरिकाहुआ अपाचे" नाम के रेड इंडियन कबीले के सरदार थे।

"प्रिय पुत्र," पिता ने कहा, "आगे चलकर एक दिन तुम्हें मेरी जगह सरदार बनना है। लेकिन उसके पहले बहुत सी ऐसी बातें हैं जो मुझे तुमको सिखानी होंगी।"

कोचीसे के पिता ने सबसे पहला पाठ जो उसे पढ़ाया, वह था हथियार बनाने का।

"लेकिन मुझे इन हथियारों की क्या ज़रूरत?", कोचीसे ने पूछा।

"क्योंकि कबीले का सरदार बनने के लिए तुम्हें एक कुशल शिकारी और योद्धा बनना होगा," उसके पिता ने कहा। "लोगों को यह भरोसा होना चाहिए कि तुम उनकी रक्षा कर सकते हो। और हो सकता है, कि तुम्हें हमारे शत्रुओं के साथ युद्ध करना पड़े, जो हमारी ज़मीन हड़पना चाहेंगे।"

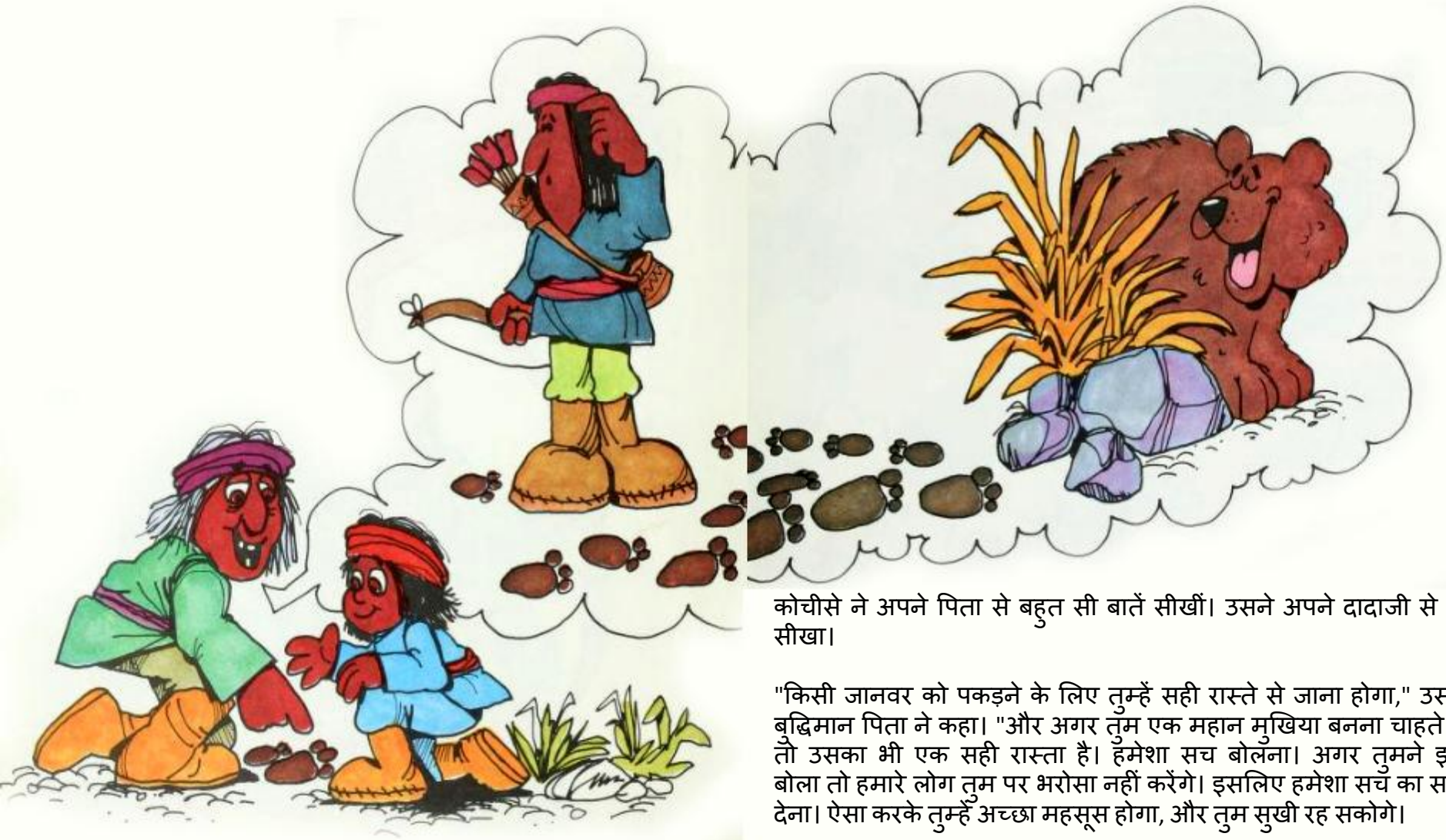

कोचीसे ने अपने पिता से बहुत सी बातें सीखीं। उसने अपने दादाजी से भी सीखा।

"किसी जानवर को पकड़ने के लिए तुम्हें सही रास्ते से जाना होगा," उसके बुद्धिमान पिता ने कहा। "और अगर तुम एक महान मुखिया बनना चाहते हो तो उसका भी एक सही रास्ता है। हमेशा सच बोलना। अगर तुमने झूठ बोला तो हमारे लोग तुम पर भरोसा नहीं करेंगे। इसलिए हमेशा सच का साथ देना। ऐसा करके तुम्हें अच्छा महसूस होगा, और तुम सुखी रह सकोगे।

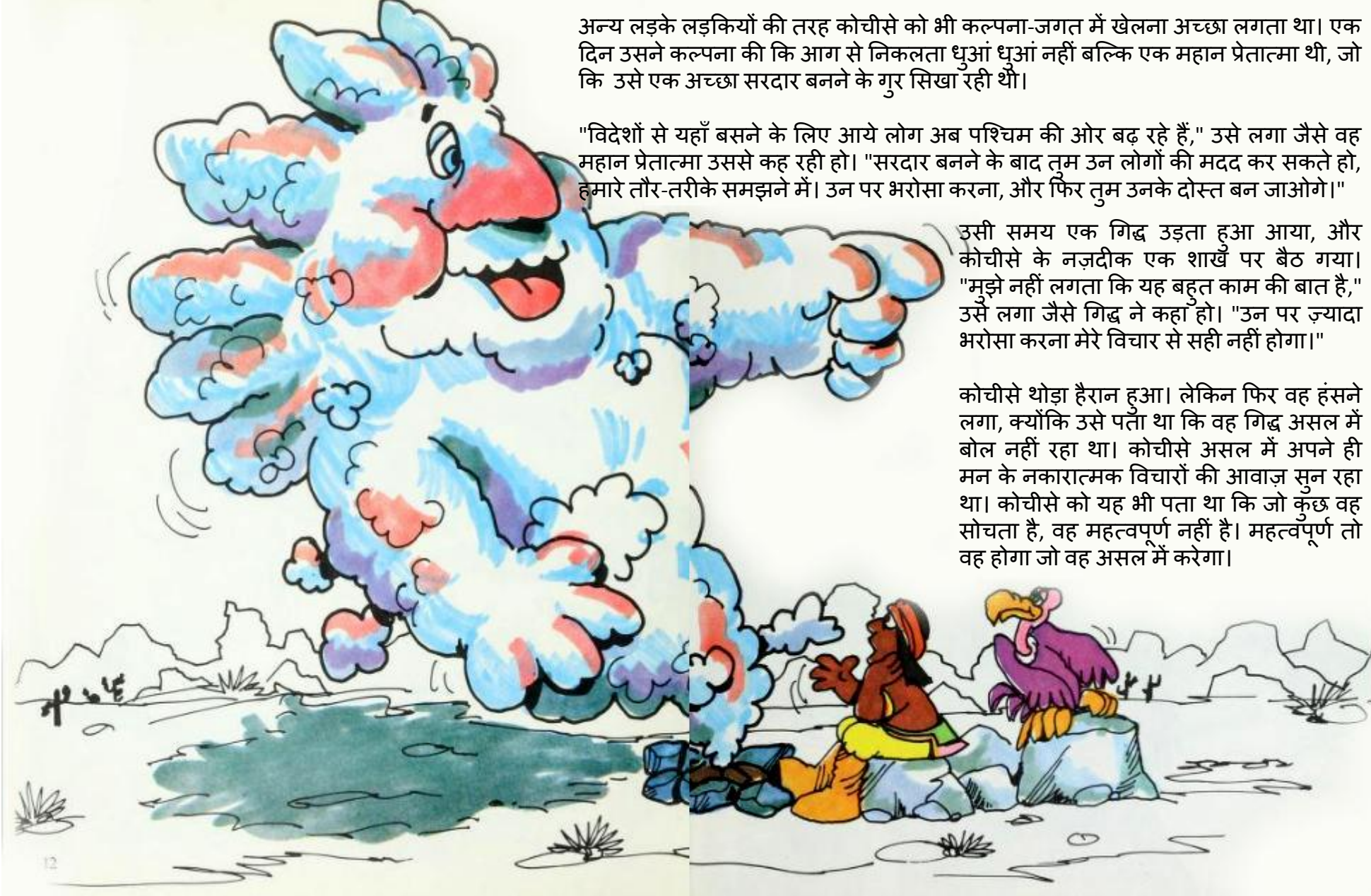

अन्य लड़के लड़कियों की तरह कोचीसे को भी कल्पना-जगत में खेलना अच्छा लगता था। एक दिन उसने कल्पना की कि आग से निकलता धुआं धुआं नहीं बल्कि एक महान प्रेतात्मा थी, जो कि उसे एक अच्छा सरदार बनने के गुर सिखा रही थी।

"विदेशों से यहाँ बसने के लिए आये लोग अब पश्चिम की ओर बढ़ रहे हैं," उसे लगा जैसे वह महान प्रेतात्मा उससे कह रही हो। "सरदार बनने के बाद तुम उन लोगों की मदद कर सकते हो, हमारे तौर-तरीके समझने में। उन पर भरोसा करना, और फिर तुम उनके दोस्त बन जाओगे।"

उसी समय एक गिद्ध उड़ता हुआ आया, और कोचीसे के नज़दीक एक शाख पर बैठ गया। "मुझे नहीं लगता कि यह बहुत काम की बात है," उसे लगा जैसे गिद्ध ने कहा हो। "उन पर ज़्यादा भरोसा करना मेरे विचार से सही नहीं होगा।"

कोचीसे थोड़ा हैरान हुआ। लेकिन फिर वह हंसने लगा, क्योंकि उसे पता था कि वह गिद्ध असल में बोल नहीं रहा था। कोचीसे असल में अपने ही मन के नकारात्मक विचारों की आवाज़ सुन रहा था। कोचीसे को यह भी पता था कि जो कुछ वह सोचता है, वह महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण तो वह होगा जो वह असल में करेगा।

साल पर साल बीतते गए, और आख़िरकार कोचीसे मुखिया बन गया। उसे अपने दादाजी के शब्द याद थे, और वह हमेशा सच्चाई की राह पर चलता था। उसके लोगों को पता था कि वे उस पर भरोसा कर सकते थे, क्योंकि वह कभी झूठ नहीं बोलता था।

जब कोचीसे मुखिया बना तो एक विशाल भोज का आयोजन किया गया। रेड इंडियन युवकों ने जोश के साथ नृत्य किया, और यहाँ तक कि गिद्ध भी ख़ुशी से फड़फड़ाता हुआ चारों ओर उड़ रहा था।

"चलो अच्छा है!" कोचीसे ने गिद्ध को देख कर कहा। "यह गिद्ध अपनी मस्ती में इतना मशगूल है, कि मुझे तंग नहीं करेगा।"

कोचीसे एक बुद्धिमान मुखिया बनना चाहता था। उसने निश्चय किया कि वह अपने लोगों की भलाई के लिए जो बन पड़ेगा सो करेगा।

तुम्हें क्या लगता है? क्या किया होगा उसने?

वह नज़दीक के सेना मुख्यालय को गया, और वहां के कर्नल से बात की जो कि वहां तैनात सैनिकों का मुखिया था।

"विदेशों से आने वाले लोग हम अपाचे लोगों की धरती पर आकर बस रहे हैं," कोचीसे ने कहा, " और तुम और तुम्हारे सैनिक उनकी रक्षा के लिए यहाँ तैनात हो। मैं तुम्हें यह बताने आया हूँ, कि मैं तुम लोगों के साथ शांति चाहता हूँ।"

"मैं भी शांति चाहता हूँ," कर्नल ने उत्तर दिया।

"अच्छा है," कोचीसे ने कहा। "अगर मेरे लोगों को हमारी इस प्राचीन धरती पर खुल कर घूमने फिरने की आज़ादी हो, तो कोई कारण नहीं कि हम तुम्हारे सैनिकों के साथ युद्ध करें।"

"मुझे मंज़ूर है," कर्नल ने कहा।
कर्नल और कोचीसे ने शांति कायम रखने की पूरी कोशिश की।

लेकिन बाहर से आकर बसने वालों के तौर तरीके रेड इंडियन लोगों से बहुत अलग थे। उन्होंने जगह जगह बाड़ें खड़ी कर लीं, जिससे रेड इंडियनों के शिकार करने के पुराने रास्ते बाधित हो गए। इससे रेड इंडियन लोग बड़े हैरान और नाराज़ हुए। हर कोई उत्तेजित और क्रोधित था। रेड इंडियनों और विदेशियों का एक दूसरे की राह में न आना बड़ा मुश्किल होता जा रहा था।

फिर एक बड़ी दुखद घटना हो गई।

अपाचे लोगों के एक समूह ने, जो असल में कोचीसे के कबीले का नहीं था, उन पर आक्रमण कर दिया। उन्हें विदेशियों पर भरोसा नहीं था, और उनके कार्य-कलापों से वे बहुत क्रुद्ध थे।

इस आक्रमण की वजह से विदेशियों का रेड इंडियनों पर से भरोसा उठ गया। उन्हें लगा कि सभी इंडियन उनसे शत्रुता रखते हैं।

निश्चय ही, असल में ऐसा नहीं था। शांति के लिए कोचीसे पर भरोसा किया जा सकता था।

लेकिन फिर एक बहुत बड़ी ग़लती हो गई।

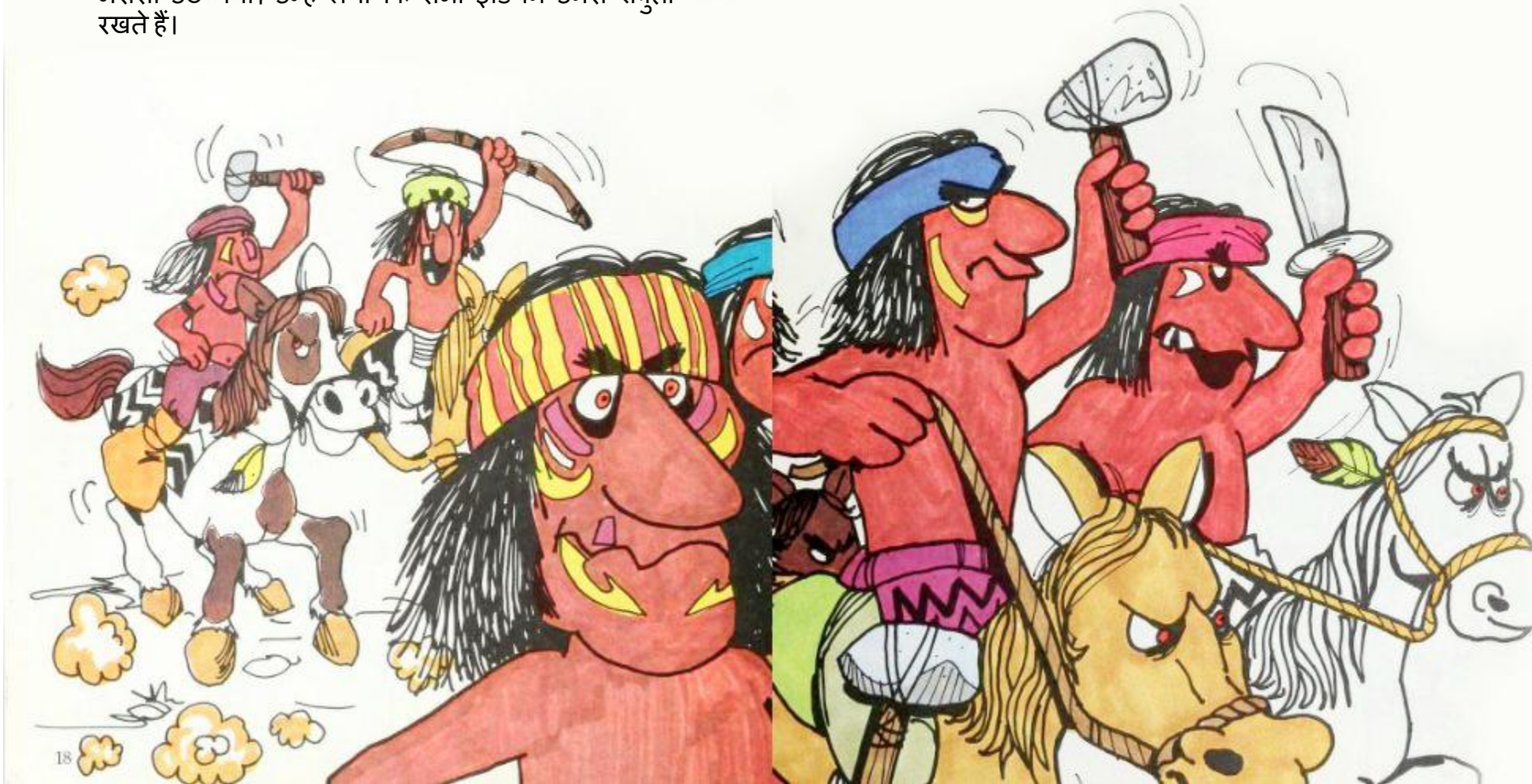

कुछ रेड इंडियनों ने एक पशु फार्म पर हमला किया, और सारे पशुओं को ले भागे। फार्म के मालिक को लगा कि वे कोचीसे और उसके लोग थे।

उसका ऐसा सोचना सही नहीं था। कोचीसे उन लोगों में शामिल नहीं था। लेकिन डर और गुस्से की वजह से वह जल्दबाज़ी में इस नतीजे पर पहुँच गया।

"मैं सेना के पास जाऊंगा!" फार्म मालिक ने कहा। "सैनिक मेरी मदद करेंगे, कोचीसे से बदला लेने में।"

वह सेना के दफ्तर में गया, जहाँ का प्रभारी एक नौजवान लेफ्टिनेंट था।

"कोचीसे और उसके आदमियों ने मेरे फार्म पर हमला करके मेरे सारे पशु चुरा लिए," उसने क्रोधित स्वर में बताया। "उन्हें इसकी सजा मिलनी ही चाहिए।"

वह लेफ्टिनेंट वहां हाल ही में आया था, और उसे कोचीसे के बारे में पता नहीं था। उसने फार्म मालिक की बातों का विश्वास कर लिया। "मुझे इसी बात का डर था, कि हम रेड इंडियनों पर भरोसा नहीं कर सकते।" लेफ्टिनेंट ने कहा। "मैं ज़रूर किसी तरह कोचीसे को कैद करूँगा।"

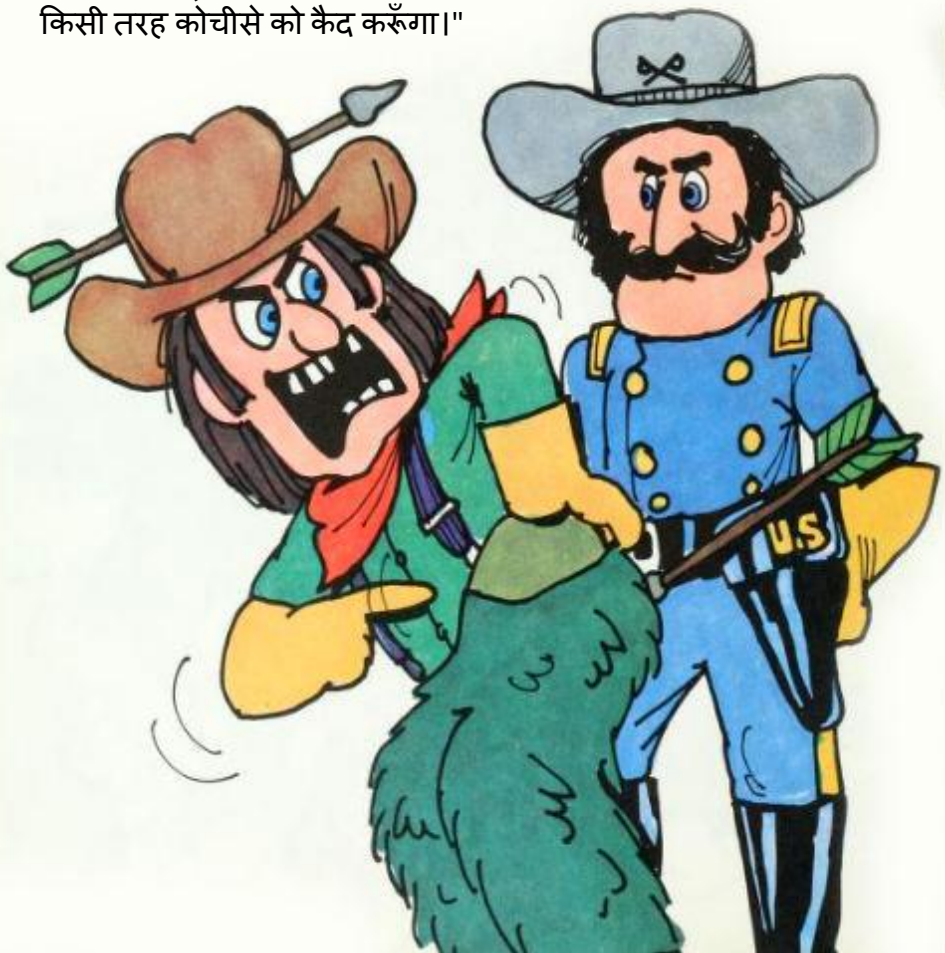

वह एक आदमी के पास गया, और बोला, "मुझे पता है, कोचीसे से तुम्हारी दोस्ती है। तुम जाकर उससे कहो कि वह सेना के दफ्तर में आकर मुझसे मिले। मुझे फार्म पर हुए हमले के बारे में उससे पूछताछ करनी है।"

"कोचीसे कभी किसी फार्म पर हमला नहीं कर सकता," उस आदमी ने कहा।

"वह ठीक है, लेकिन फार्म के मालिक ने उसकी शिकायत की है, इसलिए मुझे पूछताछ तो करनी ही होगी।" लेफ्टिनेंट ने चतुराई से कहा।

"मैं जाकर कोचीसे से बात करूँगा," उस आदमी ने कहा। "लेकिन मुझे लगता है कि कोई बड़ी ग़लतफ़हमी हुई है। कोचीसे तो रेड इंडियनों और विदेशी आगंतुकों के बीच भरोसा पैदा करना चाहता है।"

कोचीसे को जब पता चला कि लेफ्टिनेंट क्यों उससे मिलना चाहता है, तो वह बहुत विचलित हो गया। "मैं कह चुका हूँ कि मैं शांति बनाये रखना चाहता हूँ, और मैं झूठ नहीं बोलता," उसने उस आदमी से कहा।

फिर उसने अपनी भौहें सिकोड़ीं। "सेना की छावनी में जाना शायद मेरे लिए सुरक्षित नहीं है," उसने सोचा, "लेकिन मैंने वादा किया है कि शांति बनाये रखने के लिए मैं सब कुछ करूँगा। मैं अवश्य जाऊंगा और उन्हें बताऊंगा कि फार्म पर हमला करने वाले लोग मेरे सैनिक नहीं थे।"

"सावधान रहना कोचीसे," आशंकित गिद्ध ने फुसफुसा कर कहा। "हो सकता है कि लेफ्टिनेंट तुमसे झूठ बोल रहा हो।"

लेकिन कोचीसे ने गिद्ध की बात नहीं सुनी। वह अपने परिवार के कुछ लोगों के साथ छावनी को गया, और शांति के प्रति अपने प्रतिबद्धता जताने हेतु कोई हथियार साथ नहीं ले गया। जब वह छावनी के नज़दीक पहुंचा, तो उसने शांतिसूचक सफ़ेद झंडा फहराता देखा।

"अच्छा है," कोचीसे ने सोचा। " इसका मतलब मुझे कोई खतरा नहीं है। सैनिक मेरी बात ठीक से सुनेंगे।"

क्या तुम्हें लगता है, सैनिकों ने उसकी बात सुनी होगी? आशंकित गिद्ध को इस बात का बिलकुल भरोसा नहीं था।

गिद्ध का शक ठीक ही निकला। कोचीसे और उसके लोग जैसे ही छावनी में घुसे, सैनिकों ने उन्हें गिरफ्तार करके बंदी बना लिया।

कोचीसे को बहुत गुस्सा आया। "मैं और मेरे लोग शांति के झंडे तले यहाँ आये हैं," उसने कहा। "हम शांति पूर्वक रह रहे हैं। हमने फार्म पर हमला नहीं किया। तुमने अपना वादा तोडा है, लेकिन हमने अपने वादे का सम्मान किया है।"

"मुझे तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं है," लेफ्टिनेंट ने बेरुखी से कहा। "तुम झूठ बोल रहे हो।"

"कोचीसे, इनसे छूट कर भागने की कोशिश करो," गिद्ध चिल्लाया।

कोचीसे ताकतवर भी था, और बुद्धिमान भी। वह सैनिकों से छूट कर भागने में कामयाब हो गया। जब वह छावनी से भाग रहा था, सैनिक पीछे से उस पर गोलियां चला रहे थे।

"मैंने तुम्हें बताया था, कि सैनिक झूठ बोल रहे थे," गिद्ध ने चिल्ला कर कहा।

कोचेस ने कोई जवाब नहीं दिया। वह अपनी जान बचा कर भागता रहा, जब तक कि सैनिक बहुत पीछे नहीं रह गए। और जब उसने रुक कर साँस ली, तो उसे छावनी में कैद अपने लोगों का ध्यान आया। वे छूट कर नहीं भाग पाए थे।

कोचीसे खुश था कि वह बच कर भाग आया, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि पीछे छूट गए अपने साथियों के बारे में क्या करे। सच्चाई और भरोसे की बातों के प्रति भी उसके मन में संदेह पैदा हो रहा था।

"मूर्ख मत बनो," गिद्ध ने कहा, "देखो, भला सच बोल कर तुम्हें क्या मिला। अगर ये विदेशी और उनके सिपाही तुमसे झूठ बोल सकते हैं, तो तुम भी ऐसा क्यों नहीं करते।"

"मैं झूठ नहीं बोलूंगा," कोचीसे ने गिद्ध से कहा। "मैं समझता हूँ, सही क्या है।"

कोचीसे अपने गांव वापस पहुंचा, और अपने कबीले को इकट्ठा किया। "लेफ्टिनेंट ने हमसे झूठ बोला," उसने सबसे कहा। "उसने हमारा भरोसा तोडा है। उसके सैनिकों ने हमारे कुछ लोगों को बंदी बना लिया है। मैं तो छूट कर भाग आया, लेकिन दूसरे नहीं आ सके।"

"अब जो काम हमें करना होगा, मुझे करने में दुःख हो रहा है। लेकिन गाड़ी-घर में तैनात गोरे आदमी को पकड़ कर हमें बंदी बनाना होगा, जब तक कि वे हमारे लोगों को वापस नहीं करते।"

और अपाचे लोगों ने गाड़ी-घर वाले आदमी को पकड़ लिया। फिर कोचीसे ने अपने एक बहादुर साथी को छावनी के सैनिकों से बंदियों की अदला-बदली की बात करने के लिए भेजा।

क्या लेफ्टिनेंट ने उसकी बात सुनी ?

"बिलकुल नहीं," उसने कहा। "हम तुम्हें फार्म पर हमला करने के लिए सबक सिखाएंगे।"

"लेकिन कोचीसे ने फार्म पर हमला नहीं किया था," उस रेड इंडियन ने कहा।

"मुझे तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं है," लेफ्टिनेंट ने पलट कर जवाब दिया।

"कोचीसे कभी झूठ नहीं बोलता," इंडियन ने कहा। "जब सच का साथ देना आसान नहीं होता, तब भी वह सच ही बोलता है। जो भी कोचीसे को जानता है, उस पर भरोसा करता है।“

"ठीक है, लेकिन न तो मैं उसे जानता हूँ, और न उस पर भरोसा करता हूँ," लेफ्टिनेंट ने कहा।

जानते हो क्या होता है, जब लोग एक दूसरे पर भरोसा नहीं करते?

वे आपस में लड़ने लगते हैं।

जब उसके लोग उसे वापस नहीं मिले, कोचीसे को लगा कि अब और कोई रास्ता नहीं है। उसे सैनिकों से युद्ध करना ही होगा।

और फिर एक भयंकर युद्ध शुरू हो गया।

जैसा कि सभी लड़ाइयों में होता है, दोनों ओर के लोग घायल हुए। कुछ मरे भी। अधिकांश लोग चाहते थे कि काश शांतिपूर्वक रहने का कोई रास्ता निकल आता।

"कितना अच्छा होता, अगर हम इन विदेशियों और उनके सैनिकों पर भरोसा कर पाते," कोचीसे ने उदास होकर सोचा। "काश वह हम पर भरोसा कर पाते। लेकिन लड़ाई के चलते हम कभी एक दूसरे पर भरोसा नहीं बना सकते।"

जबकि इंडियन लोगों और विदेशी सैनिकों के बीच लड़ाई पूरे ज़ोरों पर थी, एक दूसरी लड़ाई शुरू हो गई थी। इसका नाम था गृह युद्ध। यह युद्ध बहुत दूर, अमेरिका के पूर्वी भाग में शुरू हुआ था। बहुत से विदेशी सैनिक अपाचे इंडियनों के इलाके को छोड़ कर इस युद्ध में भाग लेने के लिए चले गए।

कोचीसे के कुछ जवानों को लगा कि शायद उन्होंने उन सैनिकों को भागने के लिए मजबूर कर दिया है।

"कोचीसे, इस बात से इतने आश्वस्त मत हो जाओ," गिद्ध ने उसे चेताया। "ऐसा सोचने का कोई कारण नहीं है, कि ये सैनिक वापस नहीं आएंगे।"

"और फिर," गिद्ध ने कहा, "विदेशी अभी भी इस इलाके में मौजूद हैं। कुछ सैनिक ज़रूर उनकी सुरक्षा के लिए रुके होंगे। तुम्हारी लड़ाई अभी ख़त्म नहीं हुई है, कोचीसे !"

कोचीसे को लगा कि शायद गिद्ध सही कह रहा है। लेकिन लड़ाई के दौरान ही एक अच्छी बात हुई।

एक दिन एक गोरे आदमी, टॉम जेफ्फोर्ड्स को एक घायल अपाचे लड़का मिला। हालाँकि टॉम अपाचे लोगों के, यानि दुश्मन इलाके में था, उसने रुक कर उस लड़के की मदद की।

टॉम पहले अपाचे लोगों से युद्ध कर चुका था। उसे पता था कि उसकी जान को खतरा हो सकता है। लेकिन वह एक अच्छा और दयालु इंसान था, और अधिकांश अन्य गोरे लोगों से भिन्न था।

टॉम अपाचे लोगों का सम्मान करता था। उसने उनकी भाषा बोलना भी सीख लिया था।

उसने उस इंडियन लड़के को सुकून पहुंचाने की भरसक कोशिश की। और यह जानते हुए भी कि अपाचे बस्ती में जाने से उसे खतरा हो सकता है, उसने उस लड़के को उसके घर पहुँचाने का वादा किया।

और फिर क्या हुआ, जानते हो ?

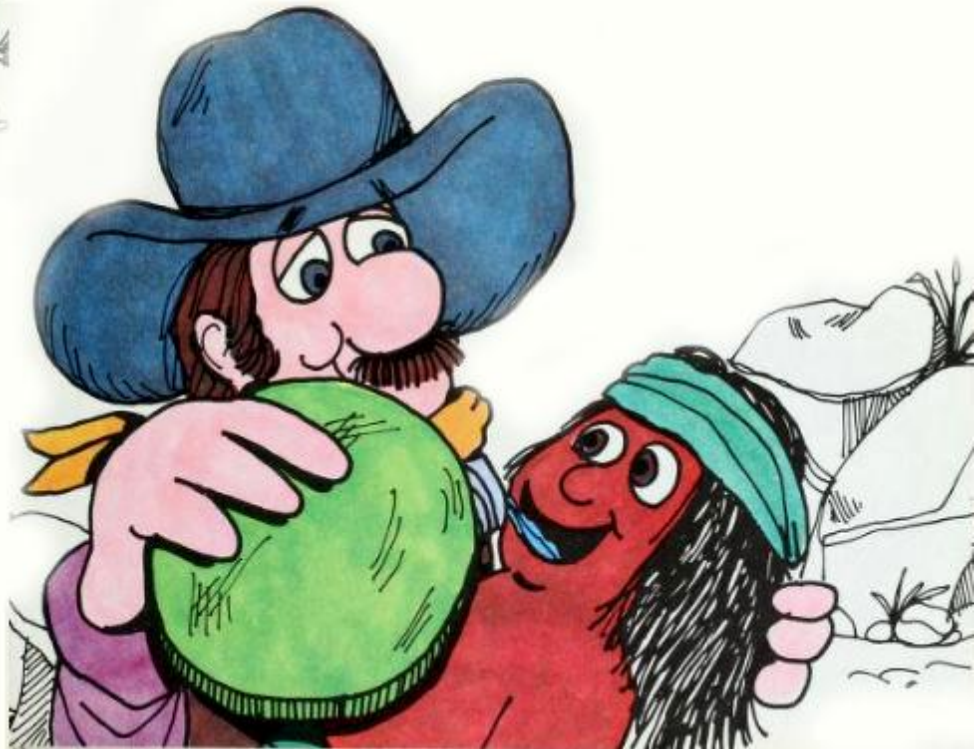

टॉम अपने घोड़े पर उस लड़के को बिठा कर अपाचे के गांव में पहुंचा। वहां क्रोधित अपाचे जवानों ने उसे घेर लिया। टॉम चिंतित हो उठा। उसे पता था कि अपाचे लोग गोरों पर भरोसा नहीं करते।

लेकिन उस छोटे लड़के ने चिल्ला कर सबको बताया, "इस आदमी ने मेरी जान बचाई है।"

अपाचे योद्धाओं की समझ नहीं आया कि वे इस गोरे आदमी का क्या करें, जो उनके गांव में चला आया था। वे आपस में विचार विमर्श करने लगे।

"हमें इसको कोचीसे के पास ले जाना चाहिए," उनमें से एक ने कहा।

"हाँ," दूसरा बोला, "कोचीसे को ही निर्णय करने दो, कि इसका क्या करें।"

तुम्हें क्या लगता है, कोचीसे ने टॉम के साथ क्या किया होगा ?

पहले उसने उस गोरे आदमी से पूछा, "तुम हमारे गांव में भला क्यों घुसे?"

"क्योंकि यह लड़का घायल और लाचार था," टॉम ने कहा। "मैं इसको मरने के लिए तो नहीं छोड़ सकता था।"

कोचीसे को बड़ा आश्चर्य हुआ। "एक इंडियन लड़के को बचाने के लिए तुमने अपने जान जोखिम में डाली," उसने कहा। "ज़रूर तुमने कभी हम लोगों से युद्ध नहीं किया होगा।"

"लेकिन मैंने किया है," टॉम ने स्वीकारा।

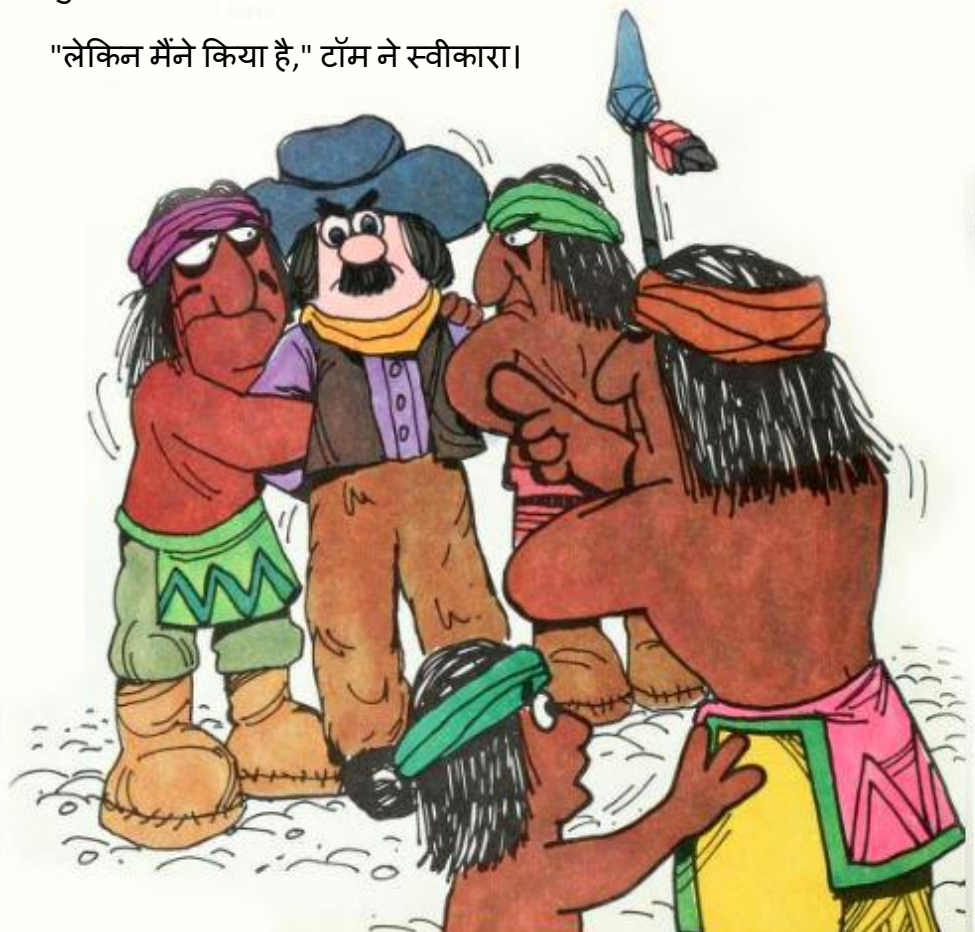

कोचीसे ने टॉम को ओर देखा। "तुम यहाँ हमारे तम्बू में हो, और हमारे योद्धाओं से घिरे हुए हो, और फिर भी यह स्वीकार करते हो कि तुम हमसे युद्ध कर चुके हो," उसने कहा।

फिर कोचीसे ने अपने योद्धाओं से कहा, "यह गोरा आदमी झूठ नहीं बोल रहा है। मुझे लगता है, हम इस पर विश्वास कर सकते हैं।"

तुम्हें क्या लगता है, कोचीसे ने टॉम पर इतनी आसानी से भरोसा क्यों कर लिया ?

क्योंकि कोचीसे ने देखा, कि टॉम ने तब भी सच बोला, जब उसके लिए झूठ बोलना अधिक सुरक्षित था।

टॉम की बहादुरी और सच्चाई के लिए कोचीसे के मन में सम्मान पैदा हुआ, और दोनों अच्छे दोस्त बन गए। दोनों एक दूसरे पर पूरा भरोसा करने लगे। वे सगे भाइयों जैसे हो गए थे।
"कोचीसे," गिद्ध ने कहा, "क्या तुम इस गोरे आदमी पर पूरा भरोसा कर सकते हो?"

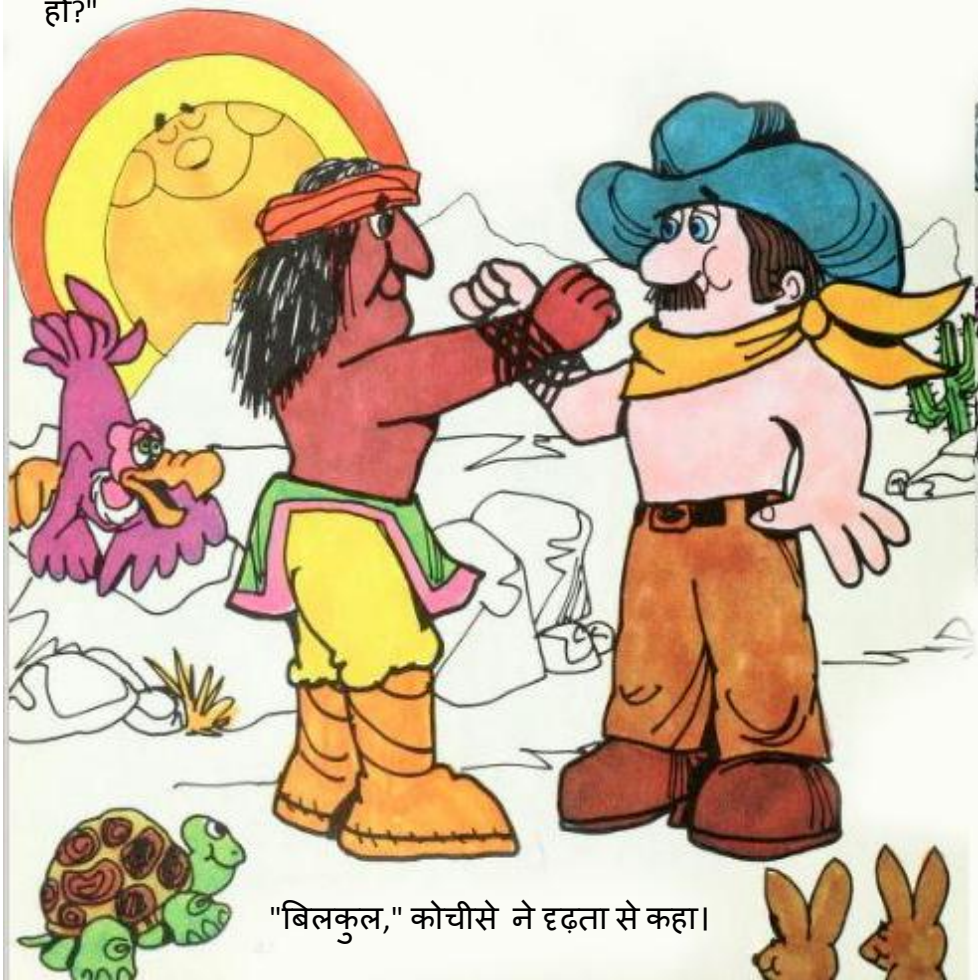

"बिलकुल," कोचीसे ने दृढ़ता से कहा।

हालाँकि टॉम और कोचीसे अच्छे दोस्त बन गए थे, लेकिन अधिकांश इंडियन लोगों को अब भी गोरे लोगों पर भरोसा नहीं था। और जब गृह युद्ध समाप्त हो गया, गोरे सैनिक बड़ी संख्या में इंडियन इलाकों में वापस लौट आये।

"मैंने तुमसे कहा था ये वापस आ जायेंगे!" गिद्ध ने कोचीसे से कहा। "अब तुम क्या करोगे ?"

"मुझे डर है, कि मुझे अभी और युद्ध करना पड़ेगा," कोचीसे ने थोड़ा दुखी होकर कहा।

वह फिर से युद्ध की तैयारी करने लगा। उसने अपने योद्धाओं को बुलाया, और वे युद्ध के लिए निकल पड़े।

"बाकी गोरे टॉम जेफ्फोर्ड्स की तरह क्यों नहीं होते ?" कोचीसे ने सोचा। "अगर ऐसा होता, तो मैं उनके साथ शांतिपूर्वक रह सकता था।"

अब इंडियन लोगों और गोरों के बीच युद्ध और तेज़ हो गए। बहुत लोग घायल हो रहे थे, या मारे जा रहे थे। इस युद्ध को रोकने के लिए कुछ करना ज़रूरी था।

उधर बहुत दूर, राजधानी वाशिंगटन में अमेरिका के राष्ट्रपति ने जनरल हॉवर्ड से मुलाकात की।

"हर किसी को पता है, कि आप पूरी तरह ईमानदार व्यक्ति हैं," राष्ट्रपति ग्रांट ने जनरल से कहा। "अपाचे लोगों के साथ यह भयंकर युद्ध समाप्त होना चाहिए। मैं आपको एरिज़ोना भेज रहा हूँ। एक आप ही हैं जो कोचीसे को विश्वास दिला सकते हैं कि हम लोग शांति चाहते हैं।"

"राष्ट्रपति जी, यह काम आसान नहीं है," जनरल हॉवर्ड ने कहा, "लेकिन मैं पूरी कोशिश करूँगा। मैं कोचीसे तक पहुँच कर शांति का प्रयास करूँगा।"

जनरल हॉवर्ड कोचीसे तक कैसे पहुंचा होगा, जानते हो ?

उसने टॉम जेफ्फोर्ड्स के हाथ अपाचे मुखिया के पास सन्देश भिजवाया। "कोचीसे को बताओ कि हम शांति स्थापित करने के लिए तैयार हैं," जनरल ने कहा। "उससे कहना कि वह मुझ पर उतना ही भरोसा कर सकता है, जितना तुम पर करता है। उसे बताना कि मैं उससे मिलना चाहता हूँ।"

"बिलकुल," टॉम ने कहा, और वह कोचीसे से मिलने चल पड़ा।

जब कोचीसे ने सुना कि जनरल एक सच्चा आदमी है, तो वह उससे मिलने को तैयार हो गया।

कोचीसे और उसके कुछ योद्धा अपने घोड़ों पर सवार होकर जनरल हॉवर्ड और उसके सैनिकों से मिलने ड्रैगून की पहाड़ियों में गए।

"मुझे टॉम जेफ्फोर्ड्स पर भरोसा है," कोचीसे ने जनरल हॉवर्ड से कहा। "उनका कहना है कि आप सच्चे इंसान हैं। मुझे तो कब से इंतज़ार था किसी भरोसेमंद गोरे नेता का। मुझे आशा है कि आप ही वह इंसान हैं।"

जनरल हॉवर्ड और कोचीसे ने युद्ध समाप्त करने के लिए बातचीत की, और लड़ाई रोकने के लिए राज़ी हो गए। कोचीसे ने वादा किया कि वह अन्य अपाचे सरदारों की सभा बुलाएगा।

"जब तक सारे सरदार न आ जाएँ, हम शांति समझौते तक नहीं पहुँच सकते," कोचीसे ने कहा।

"मैं जब तक इंतज़ार करना पड़े, करूँगा," जनरल ने कहा।

गिद्ध कोचीसे के आस-पास उड़ रहा था। "क्या तुम वाकई हॉवर्ड पर भरोसा कर सकते हो?" उसने पूछा। "और फिर क्या दूसरे सरदार शांति समझौते के लिए राज़ी हो जाएंगे?"

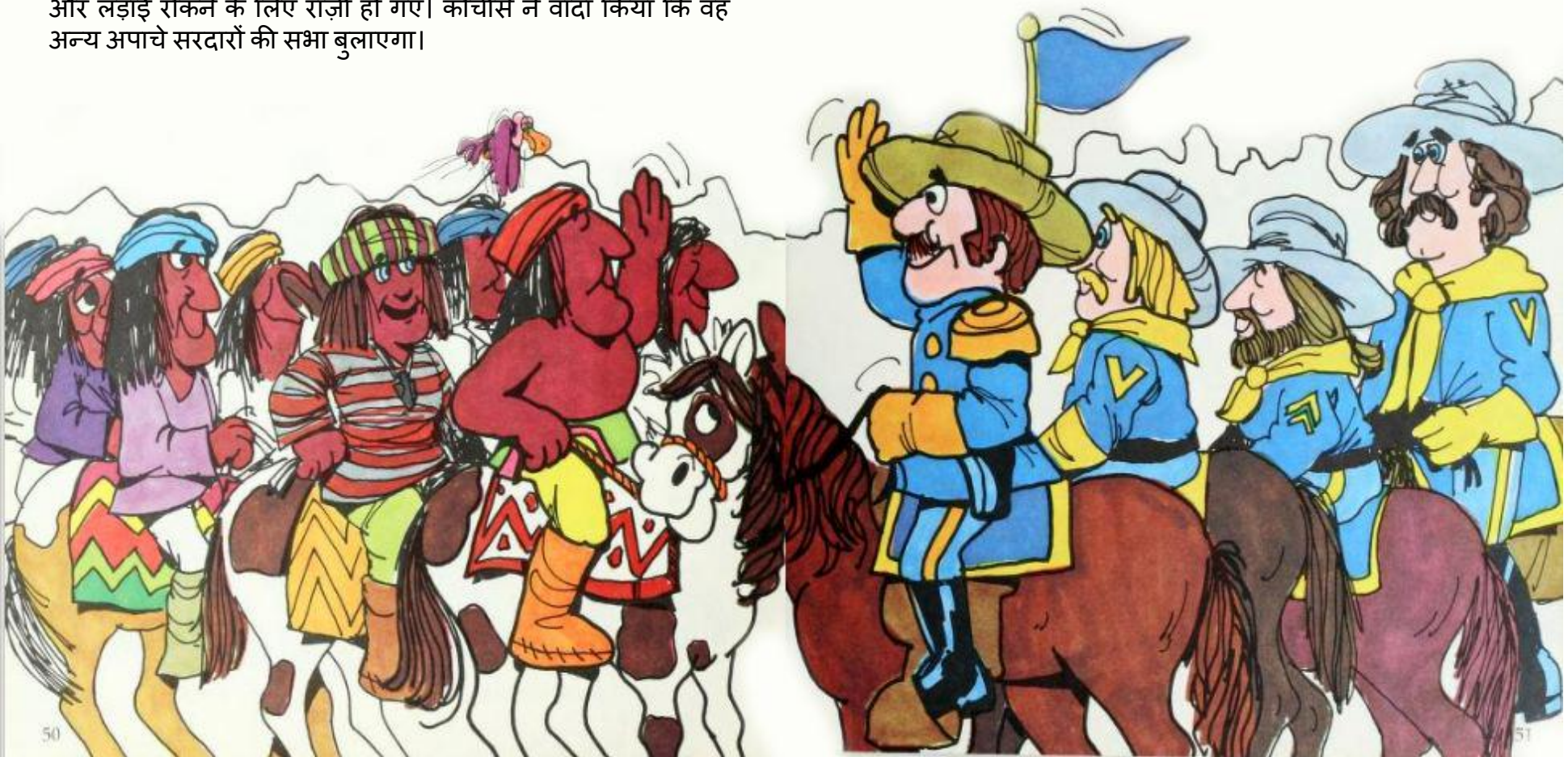

"चलो देखते हैं," कोचीसे ने कहा। और जब अन्य सभी सरदार आ गए, वह दृढ़तापूर्वक बोला, "मुझे जनरल पर भरोसा है," उसने कहा। "मुझे पूरा विश्वास है कि राष्ट्रपति शांति चाहते हैं। अगर हम समझौते के लिए तैयार होते हैं, तो हमें उसे पूरी तरह निभाना होगा। मुझे विश्वास है कि जनरल हॉवर्ड यह सुनिश्चित करेंगे कि गोरे लोग भी उसे निभाएं।"

कुछ सरदारों ने लम्बे समय तक युद्ध किया था। उन्होंने बहुत नुकसान उठाया था, और बहुत से झूठ सुने थे। वे उठ कर चल दिए, लड़ाई जारी रखने को तैयार।

बाकी के अपाचे शांति चाहते थे। वे संधि के लिए तैयार हो गए।

कोचीसे यह समाचार लेकर जनरल हॉवर्ड के पास गया। "हम में से अधिकांश तैयार हैं," उसने कहा। "हम शांति चाहते हैं।"

जनरल यही सुनना चाहते थे। "मुझे पूरा विश्वास है, कि रेड इंडियन और गोरे लोग ख़ुशी-ख़ुशी साथ रहना सीख सकते हैं," उन्होंने कहा।

"हो सकता है, यह सच बोल रहा हो," शक्की गिद्ध ने सोचा। "मैं इंतज़ार करूँगा, और देखूंगा।"

लेकिन ऐसा लग रहा था, कि आख़िरकार शांति स्थापित हो ही जाएगी।

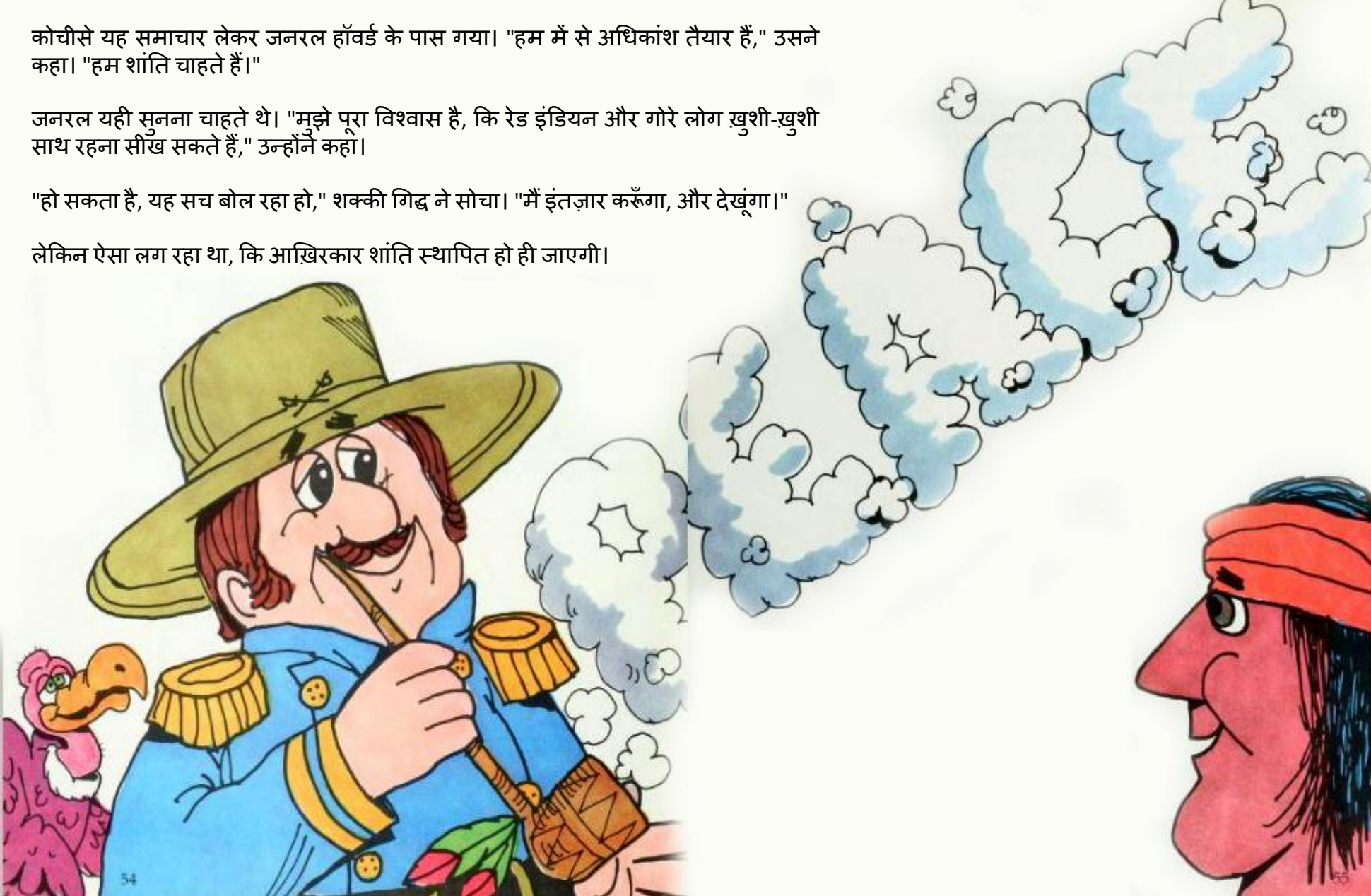

और सच में ऐसा ही हुआ।

शुरू में अपाचे लोगों को अपने इलाके से बहुत दूर जाकर बसने को कहा गया। "यह हमें मंज़ूर नहीं है," कोचीसे ने कहा। फिर जनरल हॉवर्ड ने आश्वासन दिया कि उनका कबीला अपने पुरखों की ज़मीन पर ही स्वतंत्रतापूर्वक शांति से रह सकेगा।

जनरल इस बात के लिए भी तैयार हो गए कि इंडियन लोगों का प्रतिनिधित्व टॉम जेफ्फोर्ड्स द्वारा ही किया जायेगा।

अब भविष्य सुनहरा दिखाई दे रहा था। ज़िन्दगी फिर से पटरी पर आने लगी।

कोचीसे के पास फिर से शिकार करने और मछली पकड़ने के लिए समय था। "ऐसा तभी होता है, जब लोग एक दूसरे पर भरोसा करने लगते हैं," उसने टॉम से कहा।

"बिलकुल ठीक, कोचीसे," टॉम ने सहमति जताई, "और जब तक हम समझौते पर कायम रहेंगे, शांति बनी रहेगी। लेकिन अगर हम धोखा करते हैं, तो और लड़ाई होगी, और फिर से लोग मारे जायेंगे।"

भरोसा न करने और झूठ और धोखे का सहारा लेने से जो हानि हुई थी, वह गिद्ध भली भांति देख चुका था। उसने एक क्षण के लिए विचार किया, और बोला, "सच बोलना, और लोगों में अपने प्रति भरोसा पैदा करना ही सबसे अच्छा रास्ता है। मैं उम्मीद करता हूँ कि भविष्य में सभी लोग यह बात याद रखेंगे।"

क्योंकि कोचीसे और टॉम जेफ्फोर्ड्स हमेशा सच बोलते थे, वे एक दूसरे पर भरोसा कर सकते थे, और वे बहुत से लोगों को एक शांतिमय जीवन देने में सफल हुए। और तुम? क्या तुम्हें ख़ुशी महसूस नहीं होती, जब तुम सच बोलते हो? क्या तुम्हें अच्छा महसूस नहीं होता जब लोग तुम पर भरोसा करते हैं, क्योंकि वे जानते हैं, कि तुम झूठ नहीं बोलते?
अब शायद तुम कोचीसे की तरह कोई युद्ध समाप्त न करवा पाओ, लेकिन तुम भी एक बहुत महत्वपूर्ण काम कर सकते हो।

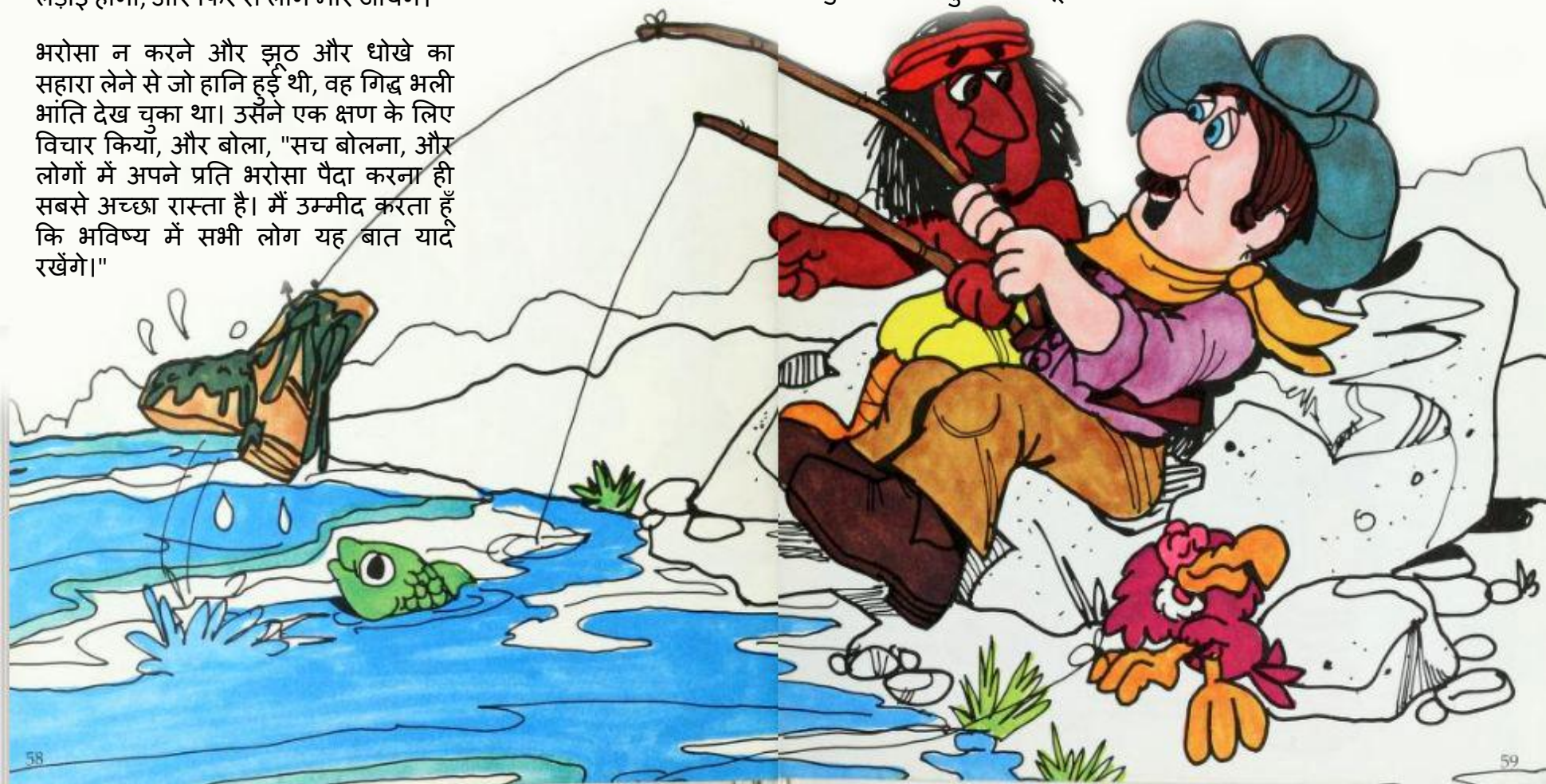

तुम सच बोलने का महत्त्व सीख सकते हो, और अपने आस-पास के लोगों का भरोसा जीत सकते हो। तब तुम भी अधिक प्रसन्न महसूस करोगे, ठीक हमारे भरोसेमंद दोस्त कोचीसे की तरह।

समाप्त

ऐतिहासिक तथ्य

कोचीसे
(1815-1874)

कोचीसे का नाम इतिहास के सबसे शूरवीर और सम्मानित रेड इंडियन सरदारों में गिना जाता है। वह चिरिकाहुआ अपाचे नामक कबीले का सरदार था, और वह भी ऐसे समय जब यह कबीला सबसे कठिन परिस्थितियों से गुज़र रहा था। गोरे विदेशी उनकी ज़मीन हड़पना चाहते थे, और उन्होंने इसका डट कर विरोध किया।

कोचीसे का जन्म १८१५ में दक्षिण एरिज़ोना की पहाड़ियों में हुआ था। चिरिकाहुआ सरदारों की लम्बी श्रंखला में एक, कोचीसे का पालन-पोषण इंडियन लोगों की उस प्राचीन परंपरा में हुआ जिसमें युद्ध-काल और शांति-काल, दोनों के नेतृत्व को महत्त्व दिया जाता था। उन्नीसवीं सदी में जब विदेशी पश्चिम की ओर बढ़ रहे थे, तब अपाचे कबीले पहले ही मेक्सिको के लोगों से युद्ध कर रहे थे, और उसके पहले लगभग ३०० सालों से वे स्पेन के लोगों से युद्ध करते रहे थे। कोचीसे को बचपन से ही अपने लोगों की शत्रुओं से रक्षा करने का प्रशिक्षण दिया गया था।

युद्ध शुरू होने के कारणों में शामिल थे, आपसी ग़लतफ़हमी, घृणा, नासमझी, और धोखेबाज़ी। एक गोरे फार्म मालिक ने कोचीसे पर झूठा आरोप लगाया कि उसने उसके घर पर हमला किया। अमेरिकी सेना के एक नासमझ अफसर ने बिना पूरी छानबीन के उसकी बात पर विश्वास कर लिया, और शांति का झंडा दिखा कर धोखे से कोचीसे और उसके परिवार को सेना की चौकी पर बुला कर बंदी बना लिया। केवल कोचीसे छूट कर निकल भागने में कामयाब हुआ। फिर कोचीसे ने भी कुछ गोरों को बंदी बना लिया, और अपने परिवार की रिहाई के लिए बातचीत करने की कोशिश की। लेकिन उस घमंडी और नातजुर्बेकार अफसर ने कोचीसे को "जंगली" कह कर उससे बातचीत करने से मना कर दिया। कोचीसे समझ गया कि गोरे लोगों पर भरोसा नहीं किया जा सकता, और एक दशक से भी अधिक समय तक उसने गोरिल्ला युद्ध किया।

लेकिन अंततः, टॉम जेफ्फोर्ड्स नाम के एक गोरे व्यक्ति के साथ अपने अच्छे संबंधों के कारण, कोचीसे एक बार फिर गोरे लोगों के प्रति भरोसा कायम करने में कामयाब रहा। हालांकि जेफ्फोर्ड्स अपाचे लोगों से युद्ध कर चुका था, लेकिन वह उनकी इज़्ज़त करता था, और उसने उनकी भाषा भी सीख ली थी। कोचीसे की छावनी में बिना हथियार लिए जाकर जेफ्फोर्ड्स ने अपाचे सरदार से व्यक्तिगत रूप से शांति स्थापित की। कोचीसे ने उसकी वीरता और ईमानदारी को देखकर उसे सम्मान दिया, और उसे अपना भाई कह कर पुकारा। और फिर जेफ्फोर्ड्स ने ही शांति वार्ता करवाने में मदद की जिसके कारण युद्ध समाप्त हो सका।

राष्ट्रपति ग्रांट ने जनरल ओलिवर हॉवर्ड को भेजा कि वह कोचीसे को खोजे, और उसके साथ शांति कायम करे। हॉवर्ड, जो कि एक जाना-माना मानवतावादी था, ने जेफ्फोर्ड्स के साथ बिना हथियार लिए पहाड़ियों से घिरे इलाके में जाकर कोचीसे से बात की। दोनों में शांति समझौता हो गया, जिसके अंतर्गत चिरिकाहुआ लोगों को मेक्सिको की सीमा परअपने पुश्तैनी इलाके में रहने का पूरा अधिकार मिल गया, और टॉम जेफ्फोर्ड्स को उनका प्रतिनिधि बना दिया गया। यह शांति १२ अक्टूबर १८७२ से लेकर कोचीसे के मृत्यु के समय, यानि ८ जून १८७४ तक कायम रही।

कोचीसे शांति स्थापित कर सका, क्योंकि उसने टॉम जेफ्फोर्ड्स और जनरल हॉवर्ड पर भरोसा किया। लेकिन उसका यह मत भी सही था कि अधिकांश गोरे लोगों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। लेकिन फिर भी, अपनी मृत्यु से ठीक पहले, कोचीसे ने एक गैर-भरोसेमन्द शत्रु के प्रति भी सच्चाई पर और अपनी बात पर कायम रहने के महत्त्व को दर्शाया। उसने भविष्यवाणी की थी कि ये विदेशी समझौता तोड़ देंगे, लेकिन उसने अपने पुत्रों से कहा था कि वे फिर भी शांति बनाये रखें,